IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्ट्रीट आर्ट का भारत में बढ़ता वर्चस्व

Growing dominance of street art in India

Neha Chauhan (Research Scholar)
Dayalbagh educational institute (deemed to beUniversity)
Dayalbagh Agra 28005

Dr.Vijaya Kumar
Dayalbagh educational institute (deemed to beUniversity)
Dayalbagh Agra 28005

Abstract

सौंदर्य या लालित्य के आश्रय से व्यक्त होने वाली कलाएं ललित कला(FINE ARTS) कहलाती हैं अर्थात् वह कला जिसके अभिव्यंजन में सुकुमारता और सौंदर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यतः: मनोविनोद के लिए हो। जैसे संगीत, नृत्य, नाट्य तथा विभिन्न प्रकार की चित्रकलाएं जो की ललित कला,उपयोगी कला,दृश्य कला से जुड़ी हुई हैं। जितनी भी कलाएं लालित्य या सौंदर्य से जुड़ी हैं वे अपने आप में ही एक अलग सौंदर्य का प्रदर्शन करती हैं। इन सभी कलाओं में एक कला स्ट्रीट आर्ट जिसे हम सभी भित्ति चित्र के नाम से भी जानते हैं

मुख्य शब्द – स्ट्रीट आर्ट, दृश्य कला, गुरिल्ला, ग्रैफिटी, अभिव्यक्ति,

प्रस्तावना

“स्ट्रीट आर्ट यानि की गलियों की दीवारों पर बने चित्र यह अपना एक अलग विकास लिए हुए हैं, स्ट्रीट आर्ट भारत तथा पश्चिमी के देशों में भी देखनें को मिलती हैं इसे GRAFFITY कला भी कहा जाता हैं भारत में इसका चलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा हैं जब मनुष्य गुफाओं आदि की दीवारों पर चित्र चित्रित करते थे इसे हमारे यहां भित्ति चित्रण कहा गया आज के आधुनिक युग में स्ट्रीट आर्ट भारत में जगह– जगह देखनें को मिलती हैं कई जगह संदेश देते हुए ऐसे चित्र चित्रित किए जाते हैं जिनसे सरल से समझा जा सके कि उस कृति द्वारा कौन सा अभिव्यक्ति दी जा रही है।

शहरों में घूमते हुए आपको कला खोजने के लिए दूर देखने की जरूरत नहीं है। यह हमारी इमारतों की वास्तुकला में और घुमावदार कला दीर्घाओं की दीवारों पर है, लेकिन यह सड़क कला के साथ है कि हम कुछ सबसे शक्तिशाली कार्यों को देखते हैं। इसे परिभाषित करना कठिन है क्योंकि यह हर रंग, आकार और शैली में आता है लेकिन स्ट्रीट आर्ट अक्सर सार्वजनिक स्थानों पर भित्तिचित्रों के कार्यों को संदर्भित करता है, आमतौर पर बिना अनुमति के किया जाता है। कुछ के लिए यह परेशानी और आंखों की रोशनी है, लेकिन

दूसरों के लिए, यह परिवर्तनकारी है। स्ट्रीट आर्ट में दीवारों को अलंकृत करके और लोगों के जीवन और संस्कृति को व्यक्त करके रिक्त स्थान में क्रांति लाने की शक्ति है।

भित्ति चित्र को मिट्टी व गाय का गोबर का घोल बनाकर दीवारों पर लिपाई की जाता है। इसे घर की विशेष जगहों पर ही बनाने की परंपरा है, जैसे- भगवान व विवाहितों के कमरे में और शादी या किसी विशेष उत्सवों पर घर की बाहरी दीवारों पर। मधुबनी पेंटिंग में जिन देवी-देवताओं को दिखाया जाता है, वे हैं- मां दुर्गा, काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश और विष्णु के दस अवतार। इन तस्वीरों के अलावा कई प्राकृतिक और रम्य नजारों की भी पेंटिंग बनाई जाती है। जानवरों, चिड़िया, फूल-पत्ती को स्वस्तिक की निशानी के साथ सजाया-संवारा जाता है।

यह कला किसी क्षेत्र के दृश्य सौंदर्य को पूरी तरह से बदल सकती है। विशाल कंक्रीट ग्रे इमारतों से भरा शहर कला के अतिरिक्त रंग और प्रकाश के साथ बदल जाता है। नीरस या उदासीन महसूस करने के बजाय, शहर में घूमने वाले लोग प्रेरित और ऊर्जावान बन सकते हैं। यह जनता को प्रोत्साहित करने में भी मदद करता है, लोगों को अपने आसपास की दुनिया पर ध्यान देने और अपने समुदाय से अलग होने के बजाय अपने पर्यावरण से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारे भौतिक वातावरण में कला के जुड़ने से, वे स्थान जहाँ हम काम करते हैं, सीखते हैं और आराम करते हैं, समृद्ध हो जाते हैं, हमारे दिमाग को नई संभावनाओं के लिए खोलते हैं। सड़क कला से जीवन की भावना दी जा सकती है क्योंकि यह चरित्र और जटिलता को जोड़ता है अन्यथा एक उबाऊ जगह हो सकती है। विशेष रूप से, जब कलाकार नागरिक और व्यापारिक नेताओं के साथ आते हैं, वे बड़े पैमाने पर काम कर सकते हैं जो पूरी तरह से एक स्थान को फिर से बनाते हैं।

जो कि उस समय का भित्ति चित्रण कहलाता है वह सिर्फ सीमित था संग्रहालयों जैसे स्थानों आदि तक परन्तु अब यह कला स्ट्रीट आर्ट के रूप में जगह–जगह गलियों, छतों, Cafe, Restraunt, नुक्कड़, आदि जगहों पर देखनें को मिलती हैं जो कि लोगों में अत्यधिक चर्चा का रूप भी बन गई है। इस कला के अलग–अलग नमूनें देखनें को मिलते हैं स्ट्रीट आर्टिस्ट अपने विचारों भावों को व्यक्त करते हुए भी इसे चित्रित करते हैं यह कला राजनीति को भी दर्शाते है राजनीति से जुड़े हुए भी चित्र कलाकार दीवारों पर व्यंगपूर्ण तरीकों से भी चित्रित करते है भारत मे स्ट्रीट आर्ट नें भूले बिसरे पड़ोस को रोशन करने शहरी उत्थान और समाजिक सुधारों में योगदान करने और समुदायों को एक साथ लाने का काम किया है देश में, हालांकि कला के इस रूप के आरंभ बिंदु का पता लगाना मुश्किल है विभिन्न बिंदुओं पर 20वीं शताब्दी के मोड़ के आस–पास, जब भारत में सड़क संस्कृति उभरने लगी लेकिन इन सभी का प्रारंभिक बिंदु सरल, सरल दीवार कला माना जाता है जिसका उपयोग ज्यादातर व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है भरत के नई दिल्ली की लोधी आर्ट डिस्ट्रिक्ट में हार दूसरी दीवार पर चित्रित विचारशील और नाटकीय कलाओं से रूबरू होंगे। पिछले कुछ वर्षों में स्ट्रीट आर्ट ने एक देश भर में विशेष रूप में विकास किया है विशेष रूप से राजधानी में कई उल्लेखनीय कोनों और क्षेत्रों को बदलने में बहुत समय ओर प्रयास किया है।

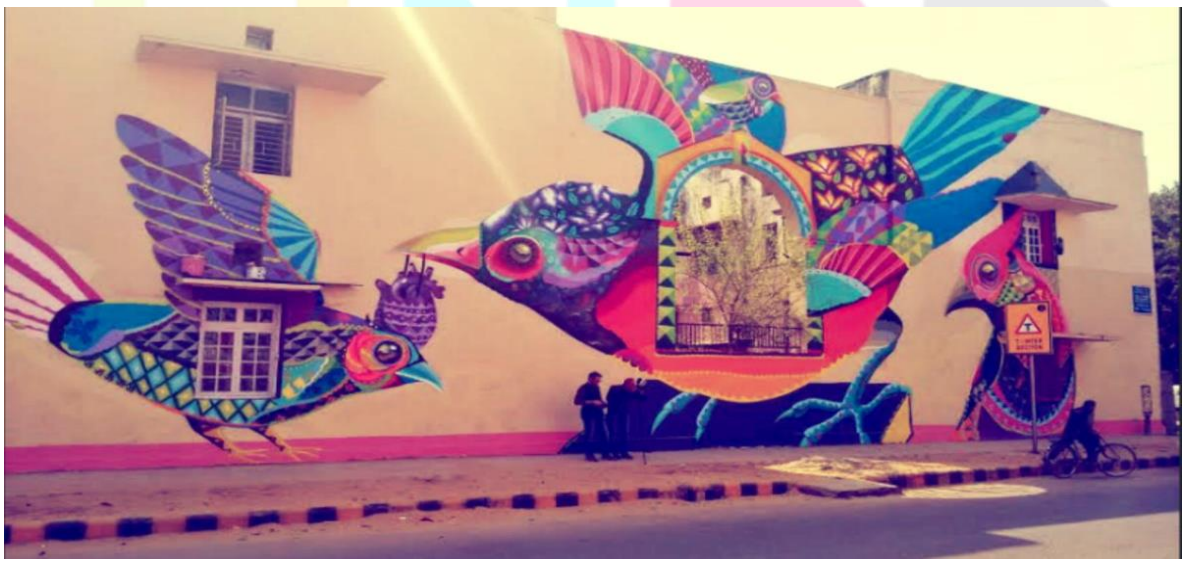

(मॉडर्न आर्ट मे बनी बर्ड लोधी मार्केट, नई दिल्ली)

लोधी कॉलौनी, हौज खास, खान मार्केट, कनॉट प्लेस, शाहपुर जाट, और वास्तव में गोविंद पुरी, अर्जन गढ़ और नेहरू प्लेस जैसे कई मेट्रो स्टेशनों की दीवारों को स्थानीय लोगों द्वारा किए गए जटिल भित्ति चित्रों के साथ नया रूप दिया दुनिया भर में बहुत से शहरों में जगह–जगह स्ट्रीट का चलन हैं। स्ट्रीट आर्ट अनोखें ढंग को बड़े ही सुन्दर व कलात्मक तरीके से स्ट्रीट पर बनाया गया संस्कृति खेल और साहित्य के विषयों के प्रति शहर के झुकाव के लिए इन सब से जुड़े भित्ति चित्र बेहद आकर्षक व उनसे जुड़ी सभी सुंदर कलाकृतियां देश की संस्कृति को दर्शाती हैं। सार्वजनिक कला द्वारा प्रदान की जाने वाली इस तरह की पहुंच और सामुहिकों को शामिल जोखिमों के बावजूद साजिश करती है।

स्ट्रीट आर्ट सार्वजनिक स्थानों पर सार्वजनिक दृश्यता के लिए बनाई गई दृश्य कला है इसे स्वतंत्र कला पोस्ट– भित्ति चित्र, नव भित्ति चित्र और गुरिल्ला कला शब्दों से जोड़ा गया है। स्ट्रीट आर्ट, उद्दंड भित्ति चित्रों के प्रारंभिक रूपों से कला के अधिक व्यावसायिक रूप में विकसित हुआ है, क्योंकि मुख्य अंतरों में से एक अब संदेश के साथ निहित है स्ट्रीट आर्ट अक्सर अपने उद्देश्य को भित्तिचित्रों की तुलना में अधिक स्पष्ट उपयोग द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित पारंपरिक कला से अलग है। जो सार्वजनिक रूप से आसपास की इमारतों, सड़कों, ट्रेनों और अन्य सार्वजनिक रूप से देखी जाने वाली सतहों पर प्रदर्शित होता है कई उदाहरण गुरिल्ला कला के रूप में आते हैं जिसका उद्देश्य उस समाज के बारें में व्यक्तिगत बयान देना है जिसमें कलाकार रहता हैं काम भित्तिचित्रों और बर्बरता की शुरुआत से नए तरीकों में स्थानांतरित हो गया है जहां कलाकार दर्शकों के लिए संदेश या सिर्फ सुंदरता लाने के लिए काम करते हैं। कुछ कलाकार समाजिक जागरूकता बढ़ने के लिए स्मार्ट बर्बरता उपयोग कर सकते है जबकि अन्य कलाकार व्यक्तिगत कलाकृति स्थापना करने से जुड़ी चुनौतियों और जोखिमों की भी सराहना कर सकते है एक आम मकसद यह है सार्वजनिक स्थान का निर्माण उन कलाकारों को अनुमति देता है जो अन्य शैलियों या दीघाओं की तुलना में अधिक व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए वंचित महसूस कर सकते है जबकि पारंपरिक भित्ति चित्र कलाकारों ने अपने काम का निर्माण करने के लिए मुख्य रूप से स्प्रे पेंट का उपयोग किया है स्ट्रीट आर्ट अन्य मीडिया को शामिल कर सकती है जैसे कि एलईडी कला, मोजेक टाइटिग, स्टैनसिल कला, स्टिकर कला, रिवर्स, ग्रैफिटी, "लॉक ऑन मूर्तियां, गेहूँ की पेस्टिंग, वुड ब्लॉकिग, यार्न बमबारी और रॉक संतुलन।

भारत में नमस्ते ट्रंप अहमदाबाद में आयोजित एक रैली को की 24 फरवरी 2020 को की गई थी यह अहमदाबाद के सरदार पटेल स्टेडियम में भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की उपस्तिथि में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मेज़बानी की गई ट्रंप के भारत आने पर मालिन बस्तियों को ढकने के लिए व गलियों को सुंदर दिखाने के लिए उन्हें सुंदर कलाकृतियों द्वारा ढक दिया गया था

(स्ट्रीट आर्ट करते चित्रकार, भारत)

भित्ति चित्र चारित्रिक रूप से लिखित शब्दों से बना है जो किसी समूह या समुदाय को गुप्त रूप से और स्पष्ट दृष्टि से दर्शाने के लिए होते है स्ट्रीट आर्ट का गप्पी संकेत यह है कि इसमें आमतौर पर चित्र, चित्र या प्रतीक शामिल होते है जो एक संदेश देने के लिए होते

है जबकि दोनों काम दर्शकों को एक संदेश का प्रतिनिधित्व करने या बताने के लिए है, दोनो के बीच एक अंतर विशिष्ट दर्शकों में आता हैं जिसके लिए यह है कि दिखाए गए संदेश आमतौर पर सभी के लिए समझने योग्य होते है।

मिट्टी की दीवार पर स्ट्रीट आर्ट राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

जबकि इन दोनों प्रसार की कलाओं में कई अंतर हैं, लेकिन उनकी उत्पत्ति की तुलना अधिक में समानताएं हैं ग्रैफिटी और स्ट्रीट आर्ट दोनों ही कला के ऐसे काम है जो एक ही इरादें से बनाए गए है अधिकांश कलाकार चाहे वे गुमनाम रूप से काम कर रहे हो, जान बूझकर समझ से बाहर संदेश बना रहे हों, या किसी बड़े कारण के लिए लड़ रहे हो, लोकप्रियता, मान्यता और सार्वजनिक प्रदर्शन या अपने व्यक्तिगत विचारों, भावनाओं और जुनून को उजागर करने के लिए समान महत्वकांक्षाओं के साथ काम कर रहे हैं। स्ट्रीट आर्ट शब्द को कई अलग–अलग तरीकों से वर्णित किया गया है, जिनमें से एक शब्द गुरिल्ला कला हैं। दोनों शब्द इन सार्वजनिक कार्यों का वर्णन करती हैं जिन्हे अर्थ और इरादे से रखा गया हैं उन्हें उन कार्यों के लिए गुमनाम रूप सें किया जा सकता है जो वर्जित मुद्दों का सामना करने के लिए बनाए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप एक प्रतिक्रिया होगी, या एक प्रसिद्ध कलाकार के नाम पर। किसी भी शब्दावली के साथ, कला के इन कार्यों को कई विषयों और मुद्दों पर कलाकार के विचारों को व्यक्त करने के प्राथमिक तरीके के रूप में बनाया गया है।

भित्तिचित्र की तरह, स्ट्रीट आर्ट की एक प्रारंभिक विशेषता यह है कि इसे अक्सर किसी सार्वजनिक क्षेत्र में या स्वामी की अनुमति के बिना या उसके विरुद्ध बनाया जाता है। दोनों के बीच एक मुख्य अंतर स्ट्रीट आर्ट या गुरिल्ला कला की दूसरी विशेषता में आता है जहां इसे उद्देश्यपूर्ण रूप से असंगत कार्य का प्रतिनिधित्व करने और आस पास के वातावरण को चुनौती देने के लिए है। यह चुनौती व्यापक हो सकती है, समुदाय के भीतर के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकती है या व्यापक रूप से सार्वजनिक मंच पर वैश्विक मुद्दों को संबोधित कर सकती है।

कभी-कभी स्ट्रीट आर्ट न केवल सुंदर दिखती है, बल्कि इसका उद्देश्य भी होता है, यह अक्सर एक बयान देना चाहता है। स्ट्रीट आर्ट किसी समुदाय के जीवन और मूल्यों को व्यक्त करने का सही तरीका है। यह उन मूल्यों को उजागर कर सकता है जिन्हें लोग साझा करते हैं या जश्न मनाना चाहते हैं, उदाहरण के लिए, किसी ऐसे व्यक्ति का चित्र जो क्षेत्र में अच्छी तरह से सम्मानित है, गर्व की भावना देने में मदद करता है

ग्रामीण क्षेत्र के बाजार का दृश्य (लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली)

इस भित्ति चित्र (graffity art) में ग्रामीण परिवेश का चित्र बनाया गया है जो ग्रामीण परिवेश के बाजार का दृश्य है जिसमें समाज का ग्रामीण परिवेश कैसा होता है ये दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है। दुनिया भर में भित्ति चित्रों की दीवारों में आजकल समाजिक सड़क कला संदेश हैं यह मजबूत है, बोलती है उन मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करती है जिनका हम एक समाज के रूप में सामना कर रहे हैं।

हौज ख़ास, नई दिल्ली में बना स्ट्रीट आर्ट का चित्र

ये चित्र दिल्ली के हौज खास इलाके में बना हैं इस चित्र में राजनीतिक प्रभाव दिखाया गया है। ऐसे ही कई चित्र जगहों पर बने हुए हैं जो राजनीतिक प्रभाव डाल कर चित्रित किये गये हैं दुनियाँ भर में भित्तिचित्रों की दीवारों में आज कल सामाजिक सड़क कला सन्देश हैं यह मजबूत है, बोलती है उन मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करती हैं। जिनका हम एक एक समाप्त के रूप में सामना कर रहे हैं। अभिव्यक्ति की प्रकृति के कारण भित्ति चित्र और सड़क कला अक्सर राजनीतिक प्रभावक बन सकते हैं समसामयिक मुद्दों के बारे में सुनने के लिए समाज में एक आवश्यकता है सामान्य संदेश विषय और चित्र जिन्हें आप सड़कों पर देखतें हैं आप पर प्रभाव डाल सकते हैं।

आज देशभर भित्तिचित्र (graffity art) जिसका महत्व बढ़ता ही जा रहा है। स्ट्रीट आर्ट अर्थात भित्तिचित्र जगह जगह गलियों में देखने को मिलतीं हैं जो की पर्यावरण के सुंदर मनोरम दृश्य तो कहीं बाज़ार का दृश्य तो कहीं जो व्यंग से सम्बंधित दृश्यों कों दिखा रहे हैं आज भी जब हम किसी मंदिर या ऐसी ऐतिहासिक जगह जाते है तो वहां बने भित्ति चित्र उस घटना से सम्बन्धित कहानी बयान कर देते हैं। कलाकारों ने इसे सिर्फ देवी देवताओं या मंदिरों की दीवारों तक ही नहीं रखा वरन् इसे गलियों, बाजारों, बाजारों, रेलवे प्लेटफार्म, यहाँ तक की रेल पर भी अंकिता किये है स्ट्रीट आर्ट लोगों तक अच्छे या महत्वपूर्ण सन्देश पहुंचाने का अच्छा। प्लेटफॉर्म है।

सन्दर्भ:

- Jake , 19 April 2912–The mammoth Book of street art
- Komstantions avramidia and Tsilimpiunida ,8 dec 2016–Graffiti and street Art
- -Minda Mathew,Xuan paradise 2018– vandalism street art and cultural significance
- Rafael schacter–Esto es graffiti
- Abby Blair – 8 April 2022,graffiti Coloring book
- www.wikipedia.com
- https://artsandculture.google.com
- https://unsplash.con
- https://denikjagran.com